रावण की चाहत

एक बार रावण का कुछ मूड बदला

उसका ध्यान अंतरंगता की ओर लपका

अपने दसों सिरों से चुंबनों की इच्छा जागी

दस्यु सुन्दरियों के लिए विज्ञापन निकाला, बना अनुरागी

सुन्दरियां आयीं, इंटरव्यू हुए, रावण के चुनाव घोशित हुए

विज्ञापन में पहले ही छपा था, सुन्दरियों को भी पता था

कमसिन, दुबली कन्याएं चाहिएं थीं, जगह की कमी बताई गई थी

हर सिर के आगे प्रत्येक को खड़ा होना था, भीड़ बढ़ गई

रावण ने ये सोचा न था यूं घिर जाएगा सुन्दरियों से कि

सिर के सिर से जुड़े होने से सांस लेना मुष्किल होगा

खैर ! कामुक बली ने नरसंहार तो बहुत किए थे मगर

आज से पहले न कभी महाराज ऐसे चक्कर में पड़े थे

चुबंनों के लिए दस्युओं ने जैसे ही अधर मिलाए

दसों सिर कंपित हुए, सीधे बस षिवजी याद आए